Raga of the Month December 2025 Raga Charukeshi

राग चारुकेशी

राग चारुकेशी - यह राग कर्नाटक संगीत के मेलकर्ता नंबर २९ " चारुकेसी " का मेलकर्ता राग है। कर्नाटक पद्धति के अनुसार उसके स्वर हैं - रि गु धा नि - हिंदुस्तानी पद्धतिके अनुसार ये स्वर शुद्ध रे, शुद्ध ग , कोमल ध और कोमल नि और शुद्ध मध्यम होते है। सा, रे, ग, म, प, ध, नि इस स्केल को देखकर कुछ विद्वानोंका मत है की इस राग के स्वरूप में नट अंगका और भैरवी का संयोग प्रतीत होता है। यह संपूर्ण जाती का राग है। वादी पंचम तथा षडज संवादी है। यह राग दिनके दूसरे प्रहरमें गाया जाता है। "अभिनव गीत मंजरी" के तीसरे भाग में इस राग का विवरण दिया है जो नीचे उद्धृत किया है।

आजके ऑडियो में हम आचार्य रातंजनकर रचित तीन बंदिशें सुनेंगे जो उनके शिष्य पंडित के जी गिंडेजी ने गायी हैं। पहली बंदिश संस्कृत में रची है -"प्रिये चारुकेशी ", दूसरी विलंबित बंदिश "नैय्या परी मजधार " और तीसरी द्रुत बंदिश "बनरा बनी आयो री "

आभार - पंडित यशवंत महाले.

01-12 -2025.

Link to the list of 170+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx

राग चारुकेशी

चारुकेशी यह दाक्षिणात्य संगीत प्रणाली में एक अति मनोरंजक राग-स्वरूप है, जो कि चारुकेशी (२६वाँ मेलकर्ता) का जन्य है। अतएव इसमें दाक्षिणात्य परिभाषा के अनुसार क्रमशः षड्ज, चतुःश्रुति ऋषभ, अंतर गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, शुद्ध धैवत, कैशिक निषाद, ये स्वर लगते हैं। हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में यही स्वर क्रमशः षड्ज, शुद्ध ऋषभ, शुद्ध गांधार, शुद्ध मध्यम, पंचम, कोमल धैवत, कोमल निषाद अर्थात् सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां ये स्वर लगते हैं।

यह सम्पूर्ण जाति का राग है। इसका वादी पंचम तथा संवादी षड्ज है। दिन के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। इसका चलन भी सरल ही है।

स्वर – विस्तार

१. सा, नि़, ध़ प़, ध़ म़ प़ ध़ सा, गरे, रे, रे, गम प, मग, ग, ग, रे ग म प, धप, मपम ग, ग, रे, रे, गमप म, ग ग, रे, रे, सा।

२. सा, रे ग, गमप, पध नि, धप, मग रे, रे, गम प, सा रे ग म प ध, प, ध नि सां, नि ध प, नि, ध प म ग, ग ग, रे रे, गम प, म ग, ग, रे, रे, सा, नि़, ध़ प़, ध़ नि़ सा, रे ग म प।

३. प, म ग ग, रे ग म प, प ध, निसांरें, सां, रेंसां, निधप, म प ध नि सां, रें रें, गंमंगं रें, सां, पध, निसां, रेंसां, निधप, मप, मग रे, गमप, धनिसां, निधप, मग, ग, रे ग म प, ध निसां, रेंगंमं गंरेंसां, रें, रें, सांनिधप, धनिसां, निधप, मप, मगग, रे ग मप, धनिधप मग रे, गमप, मग रे, सा।

४. अंतरा: पपधसां, सां, रेंगंमं, रेंसां, रें रें, गंमंपं, मंगं रें, सां, रें रें, सांनिधप, मगरेगमप धनिसां, निधपमग, मपमग रे, सा।

टिप्पणी: चारुकेशी के ही समान एक धुन उर्दू गज़लों में गायी हुई प्रायः सुनाई देती है।